परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

तक्षशिला

हमार अंगना

अंक 2 | अर्द्धवार्षिक | पूर्व-स्कूल एवं अनौपचारिक शिक्षा पर परिवर्तन के प्रयासों का संकलन, आँगनबाड़ी केन्द्रों के लिए | दिसम्बर 2015

बालघर आँगन : संकल्पना और उद्देश्य

बचपन एक बच्चे के शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक एवं सामाजिक विकास के मामले में जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। 0 से 6 साल के दरम्यान बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास की दर अदभुत रहती है। यह एक ऐसा समय है जहाँ उनको व्यक्तिगत देखभाल और सीखने के अनुभव की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। 3 से 6 वर्ष के दौरान बच्चे खुद करके, छूकर, देखकर अनुभव के आधार पर सीखते हैं। उन्हें स्वतंत्रपूर्वक गतिविधि करने में मजा आता है।

इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए परिवर्तन ने अपने नरेन्द्रपुर गाँव स्थित परिसर में बचपन की देखभाल और विकास की दिशा में काम करने और आँगनबाड़ी केन्द्रों के लिए प्री–स्कूल शिक्षा का एक मॉडल स्थापित करने के उद्देश्य से 'बालघर आँगन' की शुरुआत मार्च 2014 में की जिसको अथिक प्रयासों द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है। बालघर आँगन 3–6 आयु वर्ग के बच्चों के लिए एक पहल है जिसमें विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से एक उत्साहवर्धक और मनोरंजक बाल–केंद्रित वातावरण प्रदान कराया जाता है, जिससे कि उनके बचपन का समुचित विकास हो जिसमें उनका शारीरिक सहित मानसिक विकसन शामिल है। बालघर आँगन की सुसज्जित कक्षा में उपलब्ध पूर्व–प्राथमिक शिक्षा संबंधित उपयुक्त लेखन–पाठन एवं क्रीडा सामग्री और उपकरणों की मदद से सीखने के लिए अनुकूल वातावरण बनाने की कल्पना की गई है।

बच्चों में भाषा, सामंजस्य, तार्किक विकास एवं उनके स्वतंत्र अभिवयक्ति हो इसे सुनिश्चित करने हेतु बालघर आँगन की गतिविधियों को बड़े ध्यानपूर्वक चुना जाता है। इन गतिविधियों में कहानी, कविता, बालगीत, अभिनय, ड्राइंग, खेल और शारीरिक व्यायाम शामिल हैंद्य दैनिक आधार पर बच्चों की गतिविधियाँ कराने और समुदाय की आँगनबाड़ी से सामंजस्य बनाये रखने का उत्तरदायित्व परिवर्तन की बाल फ़ैसिलिटेटर पर होता है, जो कार्य नरेन्द्रपुर पंचायत के बड़हुलिया गाँव की श्रीमती मधुबाला कर रही हैं।

पहले चरण में मार्च 2014 से 4 बालकेन्द्रों के सहयोग से शुरू हुए इस आँगन का दायरा बढ़ता जा रहा है। वर्तमान में यहाँ 7 गाँवों के 12 आँगनबाड़ी केंद्र जो कि ग्राम बंथु श्रीराम, बंथु सलोना, संथू, बर्हुलिया, बाबु भटकन, खेम भटकन और धर्मपुर में हैं, उनके 3–4 बच्चे बालघर आँगन में आकर लाभान्वित हो रहे हैं। साथ ही समय–समय पर गुनगुन, धमाचौकड़ी और नन्हे कदम कार्यशालाओं का आयोजन कर बालघर आँगन और ज्यादा बच्चों और आँगनबाड़ी सेविकाओं तक अपनी पहुँच बढ़ा रहा है।

बालघर आँगन कोशिश है एक वातावरण देने की जहाँ सब मिलकर बच्चों के समुचित विकास कर पाएँ। यह कोशिश तभी पूर्ण हो पायेगी जब बालघर आँगन के सन्दर्भ में सभी बातों एवं विचोरों को समुदाय में साँझा किया जाए – इन्ही बातों को समेट कर आपके लिए प्रस्तुत करने का प्रयास है हमार अंगना।

बायोस्कोप के रंग, बच्चों के संग

टायर के किले को बच्चों ने किया फतह!

बालघर आँगन : रूपरेखा और कार्यप्रणाली

बालघर आँगन एक ऐसा अंगना जहाँ बच्चों की चहचाहट को अलग-अलग गतिविधियों से कायम रखने की कोशिश की जा रही है। यही चहचाहट और उत्सुकता इन्हें महसूस करने, समझने और सीखने की डोर से जोड़ देती है। इस आँगन का हर एक कोना बच्चों से करता हैं बातें।

- किताबों का कोना जहाँ बच्चे अपनी पसंद की किताबें चुनते हैं और चित्रों के माध्यम से बुनते हैं अपनी एक नयी कहानी। इस कोने के माध्यम से बच्चों में कल्पनाशीलता, पहचान और किताब के प्रति प्रेम को गति मिलती है।

- क्ले (चिकनी मिट्टी) से खेलने का कोना जहाँ बच्चे बैठकर क्ले के माध्यम से अलग अलग आकर और प्रकार के वस्तु बनातें हैं। इस गतिवधि के द्वारा बच्चों के मोटर स्किल (मांसपेशी संचलन कौशल) का विकास होता है।

- एक कोना आकार परिवार और गणित को समर्पित है, जहाँ बच्चे बैठकर विभिन्न आकार और रंगों के टुकड़ों से अलंकार सजाते हैं, गणित माला से गिनती की दुनिया में झाँकते हैं तथा अंक कार्ड को छूकर और देखकर संख्यात्मक रचना जानते हैं। साथ ही खेलों और अन्य गतिविधियों की सहायता से गणित की अवधारणाओ की समझ को बढ़ाया जाता है।

- एक कोना जहाँ बच्चे डाई मशीन की सहायता से अलग-अलग जीव-जंतु, पक्षी, वस्तु के आकार को कागज़ पर काटतें हैं और फिर उसमें अपने मन से रंग भरते हैं। इस गतिविधि का मुख्य उद्देश्य बच्चों में जंतु, पक्षी, वस्तु की पहचान बढ़ाना और रंगों की पहचान करवाना है।

- खिलौने बच्चों के सबसे प्यारे साथी होते हैं, इसी को ध्यान में रखकर यहाँ एक फंतासी कोना भी रखा गया है जहाँ बच्चे अपनी पसंद के खिलौने को चुनकर अपने सबसे प्यारे साथी के साथ खेलते हैं। अपने मन से रचे खेलों की मदद से बच्चों में कल्पना-शक्ति का सृजनात्मक विकास होता है।

- कहानी कोना जहाँ बड़े-बड़े चित्र चार्ट को देखतें हैं बच्चे और उन चित्रों में दिखाई गई चीजों को ढूढते हैं जिनसे कि उनमें पहचान की समझ बढ़ पाए। चित्रों के माध्यम से बच्चे अपनी तार्किक शक्ति को पुख्ता भी करते हैं, जैसे कि तस्वीर में

खेल-खिलौनों का कोना – मैं तो भाई केला भी लूँगा और गुडिया भी मेरी!

किताब कोना – बच्चे अपनी पसंद से किताबें पढ़ते हुए

कलर पेस्टिंग कोना – तितली के पेट में रंगीन कागज चिपका रहे बच्चे

डाई-मशीन कोना – बच्चे डाई-मशीन की सहायता से तितली की शेप कटते हुए

क्ले एक्टिविटी कोना – बच्चों के साथ क्ले के माध्यम से अलग–अलग आकार के जीव–जंतु बना रहीं मधुबालाजी

मगरमच्छ ने अपना मुँह क्यों खोला हुआ है? साथ ही बच्चों में सवाल पूछने की शक्ति का भी विकास होता है।

- बालघर आँगन एक ऐसी रंगबिरंगी दुनिया है जो कि बच्चों को एक ऐसा माहौल देती है जहाँ बच्चे स्वतंत्रतापूर्वक अपनी गतिविधियों को चुन सकते हैं और सीख सकतें हैं। सभी गतिविधियाँ समूह में होने के कारण वो एक दूसरे से सीखते और सिखाते भी हैं। साथ ही उनमें एक दूसरे के प्रति अपनापन का भाव बढ़ता है।

बालघर आँगन सिर्फ बच्चों तक ही अपनी गतिविधियाँ सीमित नहीं रखना चाहता। अतः यह समय–समय पर आँगनबाड़ी सेविकाओं से अलग–अलग कार्यशालाओं के माध्यम से जुड़कर निरंतर कार्य कर रहा है।

साथ ही बालघर ने इस साल अपनी दैनिक गतिविधि के अलावे भी भिन्न–भिन्न कार्यशालाओं (जैसे गुनगुन कार्यशाला, नन्हे कदम कार्यशाला, धमाचौकड़ी कार्यशाला, आदि) का आयोजन कर के भी बच्चों में क्रियाशीलता और रचनात्मकता का विकास किया है।

गणित कोना – बच्चे आकार को पहचानते हुए

चित्र चार्ट कोना – बच्चे चर्चा करते कि मगरमच्छ ने मुँह है क्यों खोला?

हमार गतिविधियाँ

साथ साथ करें बाल कविता
दैनिक गतिविधि के अंतर्गत बच्चों द्वारा अलग–अलग कवितायेँ और बालगीत किये जाते हैं। कविता कराने का मुख्य उद्देश्य बच्चों के बीच में एक माहौल बनाना और क्रियात्मकता को बढ़ावा देना है। बच्चे जब एक्शन के साथ कविता और गीत करते हैं तो माहौल देखते ही बनता है।

चित्र भी सुनाते हैं कहानियाँ
बालघर आँगन में प्रतिदिन बच्चों को चित्र कार्ड दिये जाते हैं, जिनसे बच्चे अलग–अलग कहानियाँ बनाते हैं और एक दूसरे को सुनाते हैं। अपनी कहानी सुनाने के लिए आतुर बच्चे का अन्य बच्चों की कहानियाँ संयम से सुनना भी एक बड़ी सीख होती है नन्हों के लिए। इस गतिविधि का उद्देश्य बच्चों में कल्पनाशीलता और रचनात्मकता का विकास करना है।

आओ बांस की कामाची से बनाएँ
बच्चों को बांस की कामाची और लकड़ी के टुकड़ों से भिन्न–भिन्न प्रकार की आकृति और वास्तु बनाना भी सिखाया जाता है। इस गतिविधि का मुख्य उद्देश्य सीमित और उपलब्ध साधनों के द्वारा सज्जा उपयुक्त वस्तु बनाना और बच्चों की अँगुलियों के कौशल को विकसित और मजबूत बनाना है।

गिट्टी सिखाये गणित
गिट्टी (पत्थर के टुकड़े) की सहायता से बच्चों के बीच में गणित की अवधारणा को बताना बहुत ही सरल होता है। इसकी सहायता से बच्चों के बीच में कम/अधिक, छोटे/बड़े के अंतर और पहचान की समझ को पुख्ता किया जाता है। इस गतिविधि से उपलब्ध साधनों का शिक्षा प्रणाली हेतु भी रचनात्मक उपयोग होता है।

गुनगुन कार्यशाला
दैनिक गतिविधि के साथ ही बालघर आँगन समय–समय पर अनेक गतिविधियाँ आयोजित करता रहता है। गुनगुन कार्यशाला के अंतर्गत बालघर आँगन की आम दिनचर्या के सारे कार्यकलाप गाँव के आँगनबाड़ी केंद्र में सभी बच्चों और उनकी सेविकाओं के साथ किये जाते हैं। यह कार्यशाला प्रत्येक 6 माह पर समुदाय के किसी आँगनबाड़ी केंद्र में आयोजित की जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य आँगनबाड़ी की सेविकाओं और बच्चों के बीच में एक दूसरे के बीच अपनी समझ और अनुभव के

आँगन में कविता का रस

गिट्टी से गणित का ज्ञान

गुनगुन कार्यशाला – आज का खेल आँगनबाड़ी में

नन्हें कदम – बच्चों की ठेली में मग्न अभिभावक

नन्हें कदम – ब्लॉक के साथ मस्ती... बच्चों के साथ बड़ों की भी

धमाचौकड़ी कार्यशाला – नये-पुराने सभी साथ-साथ

कमाची करे कमाल

आधार पर सीखना और सिखाना है। अभी तक 2 गुनगुन कार्यशाला का आयोजन क्रमशः मियां भटकन के मंशा जी और नरेन्द्रपुर के उमरावती जी के केंद्र पर किया गया जिसमें कुल 500 लोगों और बच्चों की सहभागिता रही।

धमाचौकड़ी कार्यशाला

धमाचौकड़ी कार्यशाला में बालघर आँगन में आये हुए पुराने बैच के बच्चों और वर्तमान में आने वाले बैच के बच्चों के लिए दो दिवसीय गतिविधि आयोजित की जाती है। इसमें बच्चे अलग–अलग एक्टिविटी करते हैं, जिसमें दोनों बैच के बच्चे धमाचौकड़ी मचाते हुए एक दूसरे से सीखते हैं। इस कार्यशाला द्वारा पुराने बच्चों और उनकी आँगनबाड़ी के साथ बालघर आँगन के जुड़ाव की निरंतरता बनी रहती है। अबतक 2015 के जून, अगस्त और अक्टूबर में किये गए कार्यशालाओं में लगभग 200 बच्चों ने भाग लिया है।

नन्हे कदम कार्यशाला

नन्हे कदम कार्यशाला बच्चों के अभिभावकों एवं आँगनबाड़ी सेविकाओं को एक ऐसा प्लेटफोर्म प्रदान करती है जहाँ आकर उन्हें बच्चों के बीच अपने खुद के बचपन को याद करने का मौका मिलता है। यह कार्यशाला प्रत्येक 3 महीने पर आयोजित की जाती है। 2015 के जुलाई और अक्टूबर में आयोजित इस कार्यशाला में 60 बच्चों और उनके अभिभावकों ने अपनी सहभागिता दे कर अपने बच्चों को नायाब अनुभव दिया।

बच्चों की बातें

बच्चों का संसार 'परिवर्तन'

सुजीत कुमार जो की बाबु भटकन गाँव के वर्षा जी के केंद्र में आता है, जब वो पहली बार बालघर आँगन देख के फिर घर वापस गया तब उसने अपने चाचा को यहाँ की सारी बातें बताई। उसने बताया की परिवर्तन में झुला, तालाब, पेड़–पौधे को देखकर बहुत अच्छा लगा। उसने घर पे कहा मैं अब रोज बालघर आँगन जाऊँगा और वो लगातार आ रहा है।

सपनों का घर

कमली कुमारी बाबु भटकन के प्रभावती जी के सेंटर में आती है। एक दिन वो बालघर आँगन मे अपनी साथी गोल्डी से बोली की चलो हम दोनों आज लकड़ी के टुकड़ों से घर बनाते हैं। काफी मेहनत के बाद उन दोनों ने घर बनाया और बोलीं कि घर के दरवाजे पर दादी बैठेगी और हम दोनों घर के अन्दर रहेंगे। शायद उसके सपनों का घर दादी के बिना अधूरा था।

मेरा स्कूल बड़ा स्कूल

यश कुमार 3 साल का है और बड़हुलिया आँगनबाड़ी केंद्र में पढ़ने के लिए आता है। जब वो पहली बार केंद्र आया तो केंद्र देखकर रोने लगा की हम इतना छोटा स्कूल में नही पढ़ेंगे। उसी समय मैं बच्चों को लेने के लिए सेंटर गयी थी। उसकी दादी के कहने पर मैं उसे भी बालघर आँगन लेकर आई। जब हम परिवर्तन के गेट पर पहुँचे तो यश खुश होकर बोलने लगा स्कूल तो बड़ा है। मजा आएगा। जब भी वो मिलता है तो वो बोलता है कि हमको रोज परिवर्तन ले चलिए। वो जब भी केंद्र आता है तो घर से बिस्किट लाता है और तालाब के सीढ़ी पर बैठकर मछलियों को खिलाता है और बोलता है कि मछली नहा रही है हम भी नहाएँगे। ऐसा है यश!

हमार प्यारा अंगना

प्रभावातिजी के सेंटर की प्रिया 3 साल की है। वह हमेशा बालघर आँगन आना चाहती है। जैसे भी हो आना ही है। एक बार की बात है एक दिन जब मैं बच्चों को लाने के लिए सेंटर गई, तो प्रिया की तबीयत खराब होने के कारण उसकी मम्मी बोली की आज ये नहीं जाएगी। इतना सुनते ही प्रिया रोने लगी और जाने की जिद करने लगी। बड़ी मुश्किल हो गयी। अंत

बाल संगम में बच्चों का स्वागत

नाव चली भई नाव चली

चित्रों की अठखेलियाँ

खेल खेल में सीखना

में उसकी मम्मी हारकर बोली, "ले जाइय मैडम जी ये न मानी, रोऊआ दवाइया खिला दिहअ" (ले जाइए, ये नहीं मानेगी बस आप दवा खिला दीजियेगा)। मैं उसे लेकर आ गयी और वह खुश हो गयी। ऐसा प्यार है बच्चों का बालघर आँगन के लिए।

मेरा अनुभव – बाल फ़ैसिलिटेटर मधुबाला

इन बच्चों के साथ में 2 साल का एक भरा पूरा अनुभव है मेरा। अब तो लगता है कि ये मेरे जीवन के एक अहम् हिस्सा हैं। इस कार्य में अब तक मेरे साथ सभी सेविकाओं और सहायिका का भरपूर साथ रहा है। बच्चों के साथ बच्चा बनने का अपना एक अलग ही मजा है और ये बच्चे मुझे इस अनुभव से रूबरू करवाते हैं। ये बच्चे मेरे अपने हैं इस बात की जिम्मेवारी का हमेशा अनुभव रहता है। एक बार की बात है कि किन्ही कारणवश बसपूरा पास का आँगनबाड़ी केंद्र बंद हो गया तो मुझे लगा कि इन बच्चों के साथ कैसे गतिविधि कराऊँ। इसका निवारण उन बच्चों के अभिभावक से मिलकर किया कि वो अगर जगह दें तो वो वहाँ जाकर सेविका गतिविधि कर पाएँगी। अभिभावकों ने जगह दिया और शुरू हो गया बालघर आँगन किट के साथ अपना क्लास। बच्चे खुश और मैं भी खुश।

छतरी की छीना–झपटी!

नन्हीं अँगुलियों का मिट्टी पर जादू

बालघर आँगन के बच्चे

आओ आकार-परिवार से बनाएँ आदमी

आओ पकड़म-पकड़ाई खेलें

आओ सीखें गिनती गणित-माला से

आओ ब्लॉक्स से बनाएँ आकार

आओ क्ले से बनाएँ खिलौना

झूला हमारा साथी